भारतीय राजनीति के दलित नक्षत्र का यूं चले जाना

प्रेमकुमार मणि

'आये हैं सो जाएंगे, राजा -रंक -फ़क़ीर' – जो भी दुनिया में हैं, एक दिन विदा होंगे। अनेक वर्षों से बिहार की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले रामविलास जी कल चुपचाप विदा हो गए। पिछले कई महीनों से वह अस्वस्थ चल रहे थे।

मैं नहीं जानता इतिहास उन्हें किस तरह याद रखेगा। इतिहास, जैसा कि कवि दिनकर ने लिखा है, चकाचौंध का मारा होता है। वह बहुत कुछ इग्नोर अथवा उपेक्षित कर देता है और बाज़ दफा झूठ का बवंडर भी उठाता होता है। वंचित तबकों से आए लोगों के किए -दिए की तो उसे कोई खबर भी नहीं होती। फिर अपने युग के शासक तबके के विचारों का भी वह खूब खौफ खाता है। हम लोग जब बच्चे थे, ज्योतिबा फुले, आम्बेडकर, पेरियार रामासामी जैसे नेताओं का नाम भी नहीं जानते थे। जबकि दूसरे दर्जे में ही विनोबा को पढ़ना पड़ा था। आने वाले इतिहास में जब आज की गाथा लिखी जाएगी तो पता नहीं रामविलास जी रहेंगे या नहीं, और यदि रहे तो किस रूप में रहेंगे।

रामविलास जी से कुछ समय तक के लिए मेरी भी नजदीकियां रहीं। सन 2000 में मेरा जुड़ाव हुआ। कुछ समय तक प्रगाढ़ता रही, और जैसा कि मेरी आदत है, मैंने ही दिलचस्पी कम कर दी। ऐसा इसलिए कि उनका परिमंडल मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था। लेकिन इस छोटे -से समय में भी मैंने उस रामविलास को जाना, जिसे शायद दूसरे नहीं समझ पाए होंगे। मुझ से परिचय अचानक हुआ था। जनवरी 2000 की इक चिल्ला सुबह को मेरे पास फोन आया। मैं भाई के पास दिल्ली में था। उन दिनों मोबाइल फ़ोन का प्रचलन नहीं था। बेसिक फ़ोन पर, वह भी भाई के,जहाँ मैं रुका हुआ था, रामविलास जी का फ़ोन। मुझ से उसके पूर्व, ढंग की कोई जान -पहचान भी नहीं थी। मेरा अचरज स्वाभाविक था।

उन्होंने मुझे भोजन पर आमंत्रित किया। तब वह केंद्रीय मंत्री थे। मैं निर्धारित समय पर जब पहुंचा, तब वह व्यक्ति बाहर खड़े थे, जिन्होंने मेरा नंबर उन्हें दिया था। वह एक पूर्व सांसद थे। रामविलास जी ने जो आत्मीयता दिखलाई, वह मेरे लिए कुछ अचरज भरा था। किसी ने मेरे बारे में कुछ ज्यादा तो नहीं हाँक दिया? मैं सहज नहीं था। लेकिन उस रोज जो सिलसिला बना, वह तब तक बना रहा, जब तक मैंने अपनी तरफ से सुस्ती नहीं दिखाई। मैं कह सकता हूँ कि वह राजनीति में नहीं होते, तो मेरी मित्रता प्रगाढ़ होती जाती। मेरे मनोभावों को शायद वह भी जान गए थे, इसलिए मुझ पर कभी कोई जोर नहीं दिया।

(हालांकि, इसकी प्रतिक्रिया में नीतीश जी से मेरी दूरी बढ़ी। मुझे नीतीश जी ने अपनी पार्टी से बाहर किया। मैंने कोई सफाई नहीं दी। बल्कि आज़ाद हो गया। यह सब मेरे जीवन का एक अलग प्रसंग है।)

रामविलास जी से कई बार राजनीति से अलग की बातें हुईं। ऐसी बातों में उनका अंतस खुल कर सामने आता था। समाजवादी नेता रामजीवन बाबू के साथ एक बार हम लोग मिले तब अपने प्रथम चुनाव की कहानी सुनाने लगे। रामजीवन बाबू हुँकारी भरते और मंद -मंद मुस्कुराते रहे। 1969 में पहला विधानसभा उन्होंने जीता था। संसोपा के टिकट पर। फ़टे कपड़े और हवाई चप्पल में वह पार्टी दफ्तर में आए। रामजीवन बाबू तब कार्यालय सम्भाल रहे थे। उनसे ही टिकट की याचना की।

शायद अलौली क्षेत्र था। सुरक्षित। रामजीवन बाबू ने पूछा नामांकन के लिए पैसा है? रामविलास जी को शायद पता था कि ऐसे सवाल पूछे जा सकते हैं। उन्होंने पैसे दिखलाए। तब नामांकन के लिए जमानत राशि ढाई सौ ही थी। अनुसूचित समुदाय के लोगों के लिए उसकी आधी ही। रामजीवन बाबू ने सिंबल दे दिया। मुकद्दर के सिकंदर रामविलास जी चुनाव जीत कर आ गए। यह उनकी राजनीतिक एंट्री थी। बाद की कहानी सार्वजानिक है।

रामविलासजी के बारे में कुछ बातें और जाननी चाहिए। उन्होंने दलित नेता के रूप में खुद को कभी नहीं रखा। वह सोशलिस्ट राजनीति के हिस्सा रहे। 1977 में संसद में पहुंचे। वहां उन्होंने दलितों की आवाज को बुलंद किया और एक नई पहचान बनाई। कर्पूरी ठाकुर ने जब मुंगेरीलाल कमीशन की सिफारिशों को लागू किया, तब वह जी-जान से उनके पीछे लगे रहे। 1980 में वह मुट्ठी भर विपक्षी सांसदों में थे, जो इंदिरा गाँधी की आंधी झेल कर पहुंचे थे। मार्च महीने की किसी तारीख को मैंने संसद की कार्यवाही पहली दफा दर्शक दीर्घा में बैठ कर देखी थी।

इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री थीं। विपक्ष में टूटे सारंगी की तरह चरण सिंह और फूटे ढोल की तरह जगजीवन राम भी थे। रामविलास जी ने बिहार में दलित उत्पीड़न का कोई मामला उठाया। कांग्रेस सत्ता में थी। उधर से जोरदार हंगामा हुआ। रामविलासजी गरजे- ' मैं बेलछी में नहीं भारत की संसद में खड़ा हूँ। आप मेरी आवाज बंद नहीं कर सकते। शायद बेलछी का नाम आते ही इंदिराजी चौंक गईं। वह खड़ी हुईं। अंगुली के इशारे से अपने सांसदों को बैठाया। गृहमंत्री अमुक तारीख को जवाब देंगे का आश्वासन दिया। तब सदन सामान्य हुआ।

इस घटना के बीस साल बाद उनसे परिचय हुआ। एक बातचीत में जब यह प्रसंग सुनाया, तब उन्होंने कई किस्से सुनाये। बेलछी पर भी कुछ बातें बतायीं, जो आज तक सार्वजनिक नहीं हुई हैं। बेलछी काण्ड जब हुआ था, तब भी वह संसद सदस्य थे। तुरत-तुरत चुने गए सांसद। मार्च में चुने गए थे और मई में वह घटना हुई थी। अगस्त में इंदिरा जी वहाँ पहुंची थीं। रामविलास जी क्षुब्ध थे। वह जनता पार्टी में थे। पार्टी में जब आवाज उठाई तब चरण सिंह ने धमकी दी कि पार्टी से निकाल दूंगा। चुप रहो। नए-नए रामविलास जी चुप लगा गए। लेकिन उनके भीतर बहुत कुछ टूटा होगा। और शायद इसी ने दलित सेना की पृष्ठभूमि बनाई थी। धीरे -धीरे उन्होंने लड़ना सीखा। कर्पूरी ठाकुर से भी लड़े। दूसरे पिछड़े नेताओं से भी। सोशलिस्ट राजनीति में दलितों की कोई औकात नहीं होती थी। वह पिछड़ों की पार्टी थी।

रामविलास को बिहार में कांग्रेस के साथ नहीं जाना था। सोशलिस्ट राजनीति में दलितों के दिन लौटेंगे, इस उम्मीद में वह बने रहे। 1989 में वह वीपी सिंह मंत्रिमंडल में शामिल हुए। उन्होंने प्रधानमंत्री पर जोर देकर बाबासाहेब आम्बेडकर को भारतरत्न खिताब दिलवाया। मंडल आयोग से सम्बंधित फैसले पर किसी भी पिछड़े नेता से आगे बढ़ कर संघर्ष किया। लेकिन तथाकथित पिछड़े नेताओं ने बार-बार उन्हें अपमानित करने की कोशिश की। इस संबंध में सारी जानकारियां दूँ तो एक किताब हो जाएगी। 2000 में बिहार विधानसभा में उनसे मुख्यमंत्री बनने के लिए पूछा गया था। उनका फ़ोन आया और उन्होंने मेरी राय जाननी चाही। मैंने पूछा ङ्क क्या आपको लगता है कि बहुमत हासिल कर लेंगे? ' उन्होंने न कहा। मैंने प्रस्ताव ठुकराने की सलाह दी। उन्होंने प्रस्ताव ठुकरा दिया। उसके बाद नीतीश कुमार सात दिन के लिए मुख्यमंत्री हुए।

दलगत मामलों में शरद यादव ने छोटी-छोटी बातों पर उनकी नाक में दम किया हुआ था। तब ये दोनों जदयू में थे और नीतीश समता में। बिहार की राजनीति के प्रवासी पुरोहित शरद यादव रामविलासजी से नफरत करते थे। वह उनकी हर बात की खिल्ली उड़ाते थे। मैंने खुद शरद जी से यह सब सुना था। मुझे लगता था यह बात सीमित दायरे में होगी। लेकिन एक रोज पीड़ा भरे लहजे में रामविलास जी ने यह बात मुझे बतलाई। उन्होंने तय कर लिया कि अलग पार्टी बनानी है। मैंने उनका समर्थन किया। स्थापना की तारीख चुनने में मुझसे सलाह ली। मैंने ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि 28 नवंबर का दिन सुझाया। इसी रोज 2000 में दिल्ली के रामलीला मैदान में लोकजनशक्ति पार्टी की स्थापना हुई।

पार्टी को उन्होंने कैसे चलाया इस पर लिखना फिजूल है। मैं कभी सहमत नहीं हो सका। वह परिवार और गुंडों से घिरते चले गए। लेकिन जब गोधरा काण्ड पर गुजरात सरकार का विरोध किया, तब मुझे अच्छा लगा। जब वह मिले उन्हें बधाई दी। एनडीए 2004 में हार गई। लालू के साथ मिलकर उन्होंने भाजपा को पराजित किया। लेकिन 2014 में उसी नरेंद्र मोदी के समर्थन में आ खड़े हुए। मैं परेशान हुआ। लेकिन उनका फैसला हो चुका था।

तो ऐसी मिली -जुली संस्कृति के थे रामविलास जी। कुल मिला कर संवेदनशील और जुझारू। मैं उन्हें भूल नहीं सकता। एक बात उनसे जरूर सीखनी चाही कि इस शख्स को कभी क्रोध क्यों नहीं आता। उन्हें गुस्से में कभी नहीं देखा। वह अभावों के बीच पले थे, और इस बात को समझते थे कि अपमान और अभाव क्या होता है। किसी को दुखी देख कर उन्हें दुखी होते और मदद करते कई बार देखा। कोई कार्यकर्ता बिहार से आया है। किसी तरह उनके चैम्बर में आने का जुगाड़ उसने लगा लिया था। उसे देखा तब चिंहुक उठे, अरे तुम? यहां ?

रामविलास जी रोने-रोने को हो गए। एक रोज पहले ही उसका पॉकेट कट गया था। उस भूखे -फटेहाल कार्यकर्ता के पीछे अपने अफसर राठी जी को लगाया। कोई कमी नहीं होनी चाहिए। इनका काम हो और इन्हें पूरी दिल्ली घुमानी है। जब तक चाहें रहें। गाड़ी आवास की व्यवस्था अभी कीजिए।

तो यह सब कुछ भी था उनमें।

ओह रामविलास जी ! आप से मतभेद भी थे। अनेक बातों का आलोचक भी था, मैं आपका, खास कर गुंडों की एंट्री को लेकर। लेकिन आपको अभी जाना नहीं था। लोग तो चालाकी से बात करते हैं, आप जैसी खुल कर कौन बात करेगा! आप बहुत याद आओगे रामविलास जी।

बहुत भीगे मन से आखिरी सलाम!

अपील

सहयोगी साथियों का धन्यवाद देते हुए मजदूर मोर्चा आपको सूचित करना चाहता है कि कोरोना और लॉकडाउन काल में एक तरफ जहाँ फरीदाबाद के लगभग सभी छोटे अखबार बंद हो गए थे वहीं मजदूर मोर्चा आप सभी के सहयोग एवं पाठकों की मांग और उससे उपजे हौसले के कारण सफलतापूर्वक निष्पक्ष व निडर खबरें प्रकाशित करते रहने में सफल रहा है।

जैसा कि आप जानते हैं पूरा भारत आज भयंकर आर्थिक बदहाली से जूझ रहा है जिससे मज़दूर मोर्चा भी बच नहीं पाया है। इसलिये मज़दूर मोर्चा को आप सभी की मदद की जरूरत है। कृपया अपना मासिक या एकमुश्त आर्थिक सहयोग निम्नलिखित खाते में भेजें ताकि अखबार नियमित निकलता रहे। खाते में पैसा भेजने वालों से निवेदन है कि वे मजदूर मोर्चा को एसएमएस के जरिये सूचित भी कर दें।

नाम-मज़दूर मोर्चा

खाता संख्या-451102010004150

IFSC Code : UBIN0545112

Bank Name : Union Bank of India

Branch : Sector-7, Faridabad - 121006

फर्जी टीआरपी का रैकेट

मुंबई पुलिस कमिश्नर परमबीर सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दावा किया है कि फर्जी टीआरपी रैकेट चल रहा है. इस मामले में 2 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने रिपब्लिक टीवी समेत तीन चैनलों के नाम लिए हैं। उन्होंने कहा कि रिपब्लिक टीवी पैसे देकर टीआरपी खरीदता था।

उन्होंने कहा, ''बड़ा रैकेट हाथ लगा है. ये रैकेट है फर्जी टीआरपी का. टेलीविजन विज्ञापन इंडस्ट्री करीब 30 से 40 हजार करोड़ रुपये की है. विज्ञापन का दर टीआरपी रेट के आधार पर तय किया जाता है. किस चैनल को किस हिसाब से विज्ञापन मिलेगा यह तय किया जाता है. अगर टीआरपी में बदलाव होता है तो इससे रेवेन्यू पर असर पड़ता है. कुछ लोगों को इससे फायदा होता है और कुछ लोगों को इससे नुकसान होता है.''

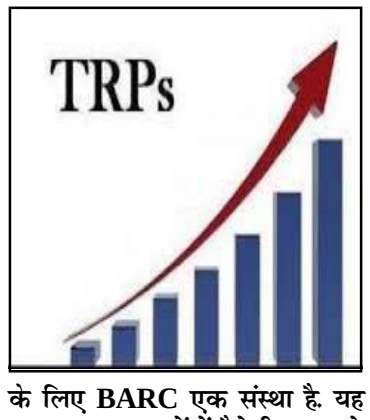

उन्होंने कहा, ''टीआरपी को मापने के लिए BARC एक संस्था है. यह अलग-अलग शहरों में बैरोमीटर लगाते हैं, देश में करीब 30 हजार बैरोमीटर लगाए गए हैं. मुंबई में करीब 10 हजार बैरोमीटर लगाए गए हैं. बैरोमीटर इंस्टॉल करने का काम मुंबई में हंसा नाम की संस्था को दिया गया था. जांच के दौरान ये बात सामने आई है कि कुछ पुराने वर्कर जो हंसा के साथ काम कर रहे थे टेलीविजन चैनल से डाटा शेयर कर रहे थे. वो लोगों से कहते थे कि आप घर में हैं या नहीं है चैनल ऑन रखिए. इसके लिए पैसे देते थे. कुछ व्यक्ति जो अनपढ़ हैं, उनके घर में अंग्रेजी के चैनल ऑन किया जाता था.''

परमबीर सिंह ने कहा, ''हंसा के पूर्व वर्कर को हमने गिरफ्तार किया है. इसी आधार पर जांच बढ़ाई गई. दो लोगों को गिरफ्तार करके कोर्ट में पेश किया गया है और उन्हें 9 अक्टूबर तक कस्टडी में भेजा गया है. उनके कुछ साथी को ढूंढ़ रहे हैं. कुछ मुंबई में हैं और कुछ मुंबई के बाहर हैं. चैनल के हिसाब से ये पैसा देते थे. एक व्यक्ति जो पकड़ा गया है उसके अकाउंट से 20 लाख रुपये जब्त किया गया है और आठ लाख रुपये कैश बरामद किया गया है.''

- पंकज चतुर्वेदी